मोहयाल इतिहास - हिन्दी

मोहयाल इतिहास, हिन्दी, में आपका स्वागत है .

मोहयालों को अपने इतिहास में बहुत रूचि है. दो तीनं दशक पहले मोहयाल इतिहास पर अपनों और दूसरों द्वारा यह प्रश्न उठने लगे कि मोहयाल स्वयं ही अपने अतीत के गौरव का डंका बजाते रहते हैं. किसी इतिहास की पुस्तक में उनके दावों की कोई पुष्टि नहीं है. मोहयाल बुद्धिजीवी कुछ हतप्रभ से हो गए परन्तु कोई संतोषजनक उत्तर नहीं थे.

लम्बी शोध और अथक प्रयासों से इस समस्या का पूर्णतया संतोषजनक ही नहीं, आश्चर्यजनक समाधान मिला है. हिन्दू इतिहास की तीन गौरवशाली शताब्दियों का विवरण, एक हजार वर्ष तक, आच्छादित रखा गया था - इसे भारत के इतिहास में सम्मिलित ही नहीं किया गया. क्या आपने किसी इतिहास पुस्तक में कभी पढ़ा कि ग़ज़नी के महमूद के आक्रमणों से पहले पंजाब में किसका शासन था? जयपाल और आनंदपाल किस राजवंश से थे?

उन तीन शताब्दियों का इतिहास अब हमारी पुस्तक AFGHANISTAN REVISITED: The Brahmana Hindu Shahis of Afghanistan and the Punjab (c. 840-1026 CE) में, प्रमाणित स्रोतों के आधार पर उपलब्ध है. यह विवरण अब इतिहास की शोध पत्रिकाओं में छापा जा रहा है. मोहयाल लेखक, इन मूल स्रोतों के आधार पर, अधिक शोध करके, मोहयाल इतिहास पर और पुस्तकें लिख रहे है: बाढ़ सी लग गयी है. पूर्ण विवरण MOHYAL HISTORY - ENGLISH में दिया गया है क्योंकि यह सब पुस्तकें अंग्रेज़ी में हैं.

हिंदी भाषी पाठकों के लिए विशेष प्रयास से, सरल शैली में, सामग्री उपस्थित है. बहुत सी जानकारी नई होगी अतः ध्यान पूर्वक पढ़ें.

**** ****

भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय (640-1000 ई)

जिसे विदेशी शासकों द्वारा छिपा कर रखा गया

सातवीं शताब्दी में अरब देश में इस्लाम धर्म का प्रादुर्भाव हुआ. उस समय दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान में भारत के जाबुल और काबुल दो हिन्दू राज्य थे. कई देशों को शीघ्रता और सुगमता से पराजित करते हुए अरबों ने ईरान साम्राज्य को भी 640 ई में जीत लिया. इस से अरब खलीफा के राज्य की पूर्वी सीमा भारत तक आ गई. कोह हिन्दू कुश के दक्षिण में, अफ़ग़ानिस्तान का दक्षिण-पश्चिमी भाग - जाबुल का हिन्दू राज्य - भारत का सीमान्त प्रदेश था. जाबुल का क्षत्रिय राजा 698 ई में अरबों की एक विशाल सेना को विध्वंस करने में सफल रहा. **यह अरबों की पहली पराजय थी. उसके पश्चात उन्हों ने इस हिन्दू राज्य पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया** .

2. कालांतर में धर्म परिवर्तित मुस्लमानों ने अफ़ग़ानिस्तान और मध्य एशिया के कई भागों में स्वशासित शक्तिशाली राज्य स्थापित कर लिए जो खलीफा के प्रभुत्व से लगभग मुक्त थे. इनमें सीस्तान के "सफार" और समरकंद के "सामानी" उल्लेखनीय हैं. 870 ई में, सीस्तान के अमीर ने शांति के लिए संधि करने के बहाने, कपट से, जाबुल के राजा का वध कर दिया. इस प्रकार गजनी के पश्चिम में ईरान तक का समस्त क्षेत्र हमेशा के लिए भारत के प्रभुत्व से निकल गया. वहां की हिन्दू जनता का बलात धर्म परिवर्तन कर के सबको मुस्लमान बना लिया गया .

3. तब तक काबुल (पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान) में एक ब्राह्मण राजवंश का शासन हो गया था जिसका राज्य दर्रा खैबर के दोनों और था. **मोहयाल दत्त और वैद जाति के (इतिहास में "ब्राह्मण हिन्दू शाही" कहे जाने वाले) इन राजवंशों ने भारत के इस सामरिक महत्व के प्रवेश-द्वार को 1000 ई तक पड़ोस के वैभवशाली और सशक्त सामानी मुस्लिम राज्य से पूरी तरह बचा कर रखा जिस से नवीं और दसवीं शताब्दी में भारत शांति और समृद्धि का उपभोग कर सका**. दसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में गज़नी में एक तुर्क सल्तनत का उदय हुआ जो सामानियों को पराजित करके बहुत शक्तिशाली हो गए. तत्पश्चात गज़नी वंश ने भारत में अपना उत्पात शुरू कर दिया जिसके विरोध में पंजाब के वैद मोहयाल वंश (जयपाल, आनंदपाल और त्रिलोचनपाल) ने कड़ा संघर्ष किया .

4. इस प्रकार हिन्दू भारत ने मुस्लिम शक्ति को तीन शताब्दियों से भी अधिक समय तक अफ़ग़ानिस्तान में रोक कर रखा. 1021 ई में पंजाब ग़ज़नी राज्य का प्रांत बन गया, परन्तु फिर भी दिल्ली पहुंचने तक, उनको लग भग दो सौ वर्ष और लग गए. मुस्लिम विजेताओं, और फिर उनके उत्तराधकारी भारत के अन्य शासकों ने भी, इन तीन सौ वर्ष की (उनके लिए अप्रिय) घटनाओं को भारत के इतिहास के संकलन में सामने नहीं आने दिया.

5. भारत की पाठ्य पुस्तकों में मध्यकालीन इतिहास महमूद के आक्रमणों से प्रारम्भ होता है. इस से पूर्व काल, 700 से 1000 ई तक का इतिहास भी पाठ्य पुस्तकों में संकलित होना चाहिए. भारत ने इतने लम्बे समय तक मुस्लिम आक्रमणकारियों का जो वीरता पूर्वक विरोध किया उस से इतिहास का एक संतुलित आंकलन सामने आएगा. दुर्भाग्य है की मौजूदा शासन द्वारा भी मध्यकालीन इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के पुनर्लेखन का कोइ प्रयास दिखाई नहीं देता.

जैसे कि ऊपर कहा गया है, अब हमारी पुस्तक **AFGHANISTAN REVISITED: The Brahmana Hindu Shahis of Afghanistan and The Punjab (c. 840-1026 CE)** में इन तीन शताब्दियों का अधिप्रमाणित इतिहास, और उस काल में मोहयाल राजाओं के शासन का पूर्ण वृतांत, उपलब्ध है. भारत के इतिहास, और मोहयाल इतिहास, के लेखकों को भी इस प्रमाणित सामग्री से बहुत सहायता मिलेगी. इतिहास की शोध पत्रिकाओं में भी इस पुस्तक पर आधारित शोधपत्र प्रकाशित हो रहे हैं. उनकी प्रतिलिपि MOHYAL HISTORY - ENGLISH में उपलब्ध है.

**** ****